Volume-10, No. 1 Feb.-2023, pp. Hin.20-24

उच्च प्राथमिक स्तर पर मंदबुद्धि विद्यार्थियों के गृह वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ0 (प्रो0)योगेश कुमार गुप्ता, शोध पर्येवेक्षक
श्री तारा सिंह शोधार्थी

सारांश
शिक्षा किसी न किसी रूप में एक शिशु का सर्वागीण विकास करके उसको अपने जीवन में विभिन्न कर्तव्य व उत्तरदायित्वों को निर्वाह करने के लिए पूर्ण रूप से तैयार करती है। शिक्षा व्यक्तित्व का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, चारित्रिक, नैतिक, अध्यात्मिक एवं संवेगात्मक विकास करती है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति सभी समस्याओं का समाधान करने के लिए योग्यता धारण करता है। स्कूलों में जिस प्रकार मानसिक मन्द बच्चों के व्यवहार परिवर्तन या शिक्षण में शिक्षकों का महत्वपूर्ण भाग होता है, उसी प्रकार घर में इन बच्चों के विकास और व्यवहार सुधार में परिवार का बहुत बड़ा योगदान होता है। परिवार के सन्दर्भ में केवल माता–पिता ही नहीं बल्कि दादा–दादी, नाना–नानी भाई–बहिन आदि आते हैं तो सक्रिय रूप से बालक के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक मानसिक दिव्यांग बालक के व्यक्तित्व के विकास हेतु उचित पारिवारिक वातावरण का होना अति आवश्यक है। शोध में निम्न निष्कर्ष प्राप्त करें – उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मानसिक दिव्यांग छात्रों के गृह वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया, उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मानसिक दिव्यांग छात्राओं के गृह वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

मुख्यशब्द– उच्च प्राथमिक विद्यालय, विद्यार्थी, पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य के विकास का मूल साधन है। शिक्षा प्राप्त करके ही मानव श्रेष्ठ बन सकता है। हमारे देश में ही प्राचीन काल से ही शिक्षा प्राप्त करने की परम्परा रही है। भारतीय दर्शनों में ज्ञान शब्द वही अर्थ रखता है जो कि व्यापक अर्थों में शिक्षा का होता है। ज्ञान तत्वों के मूल्यों को समझने में समर्थ बनाता है। भारतीय दर्शनों में केवल सूचना अथवा तत्वों के लिए ज्ञान शब्द का प्रयोग नहीं होता। अमर कोश में ज्ञान तथा विज्ञान शब्दों का अन्तर स्पष्ट करते हुए कहा है कि ज्ञान का विषय मुक्ति है जबकि विज्ञान का शिल्प और विविध शास्त्र। दूसरे शब्दों में ज्ञान वह है जो मनुष्य को अन्नत करता है जबकि व्यवहारिक जीवन में प्रयोग के लिए जो कुछ जाना जाता है अथवा सीखा जाता है, वह विज्ञान कहलाता है। सम्पूर्ण विश्व में विकलांगों की संख्या दिन व दिन बढ़ती जा रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार ''स्वास्थ्य सम्पूर्ण शरीर मानसिक और सामाजिक कल्याण की स्थिति है रोग या अशक्तताः की अनुपस्थिति मात्र नहीं है।'' विकलांगता के विषय में विद्धानों ने कहा है कि व्यक्ति की उस दशा को विकलांगता कहते हैं जो क्षति या अक्षमता के कारण से उत्पन्न होती है। इसमें शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं सम्बन्धी भूमिकाओं को सामान्य व्यक्ति की तुलना में अक्षम व्यक्ति कम निभा पाता है। इस प्रकार विकलांगता व्यक्ति की भौतिक, शारीरिक, मानसिक स्थितियों द्वारा उससे सम्बन्धित क्रिया कलापों से उत्पन्न एक प्रकार की सामाजिक स्वरूप की स्थिति है दूसरे शब्दों में विकलांगता वह हानि है जो किसी क्षति के उपरान्त व्यक्ति की आयु, लिंग एवं सामाजिक स्तर के अनुरूप कार्य करने में बाधा पहुँचाती है। जैसे यदि किसी व्यक्ति का दुघर्टनावश हाथ जल गया हो उसकी कोशिका और ऊतक देखभाल न होने कारण हाथ के संक्रमण हो गया और चिकित्सक ने पूरे हाथ को काट दिया जिससे विकलांगता की स्थिति आ जाती है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था अति प्राचीन है। भारतीय शिक्षा ने प्राचीन काल से लेकर वर्तमान

काल तक विश्व में अपने प्रदर्शन से अपनी अलग पहचान बनाई है। भारतीय इतिहास में झाँक कर देखा जाए तो मानव विकास का मुख्य साधन शिक्षा ही रही है। यदि ठीक से देखा जाए तो भारतीय संस्कृति शिक्षा पर ही आधारित है, जिसके अनेक प्रमाण भी उपलब्ध होते हैं, मानवता का तात्पर्य केवल व्यक्ति ही नही अपितु समष्टि तक का संरक्षण एवं संवर्द्धन है। इसमें जीव मात्र की सुख–शान्ति एवं समृद्धि की भावना भरी हुई है। वस्तुतः किसी भी परिवेश के लोग यदि भद्र होंगे तो इसमें विद्यमान व्यक्ति भी भला आदमी होगा। अभद्र परिवेश का प्राणी कल्याणकारी नहीं हो सकता, क्योंकि वही उस परिवेश का उत्पाद होता है। सुदृढ़ उत्पादन से ही सभ्य, समझदार एवं समृद्ध समाज की संरचना होती है। ''यंत्र विश्व भवत्यकनीडम्'' कहकर भारतीय मनीषी समूचे भू–मण्डल पर मानवता के परिपोषण का प्रत्यन्त करते रहते हैं। वर्तमान समय में कुछ बालक ऐसे हैं जो सामान्य बच्चों की तरह अपना जीवन यापन करने में सक्षम नहीं हैं। उनके सर्वांगींण विकास में विशेष शिक्षा मुख्य भूमिका निभा सकती है। क्योंकि विशेष शिक्षा के माध्यम से बालक का मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक व नैतिक विकास किया जा सकता है और मानसिक दिव्यांग विद्यार्थियों को भी शिक्षा की मुख्य धारा में शामिल कर उनके अन्दर आत्मविश्वास पैदा करके उनकी शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है।

आवश्यकता एवं महत्व

विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विषयों में कुछ विषय मानसिक दिव्यांग विद्यार्थियों के मानसिक स्तर से ऊपर के स्तर के होते हैं। इन विषयों को समझने के लिए मानसिक दिव्यांग विद्यार्थियों को अतिरिक्त शैक्षिक प्रयास कराना परिवार व विद्यालय का कार्य है। परन्तु इन दोनों के ध्यान न देने के कारण इनमें शैक्षिक पिछड़ापन आ जाता है। मानसिक दिव्यांग विद्यार्थियों के पिछड़ेपन के कई और भी कारण है। जिनमें मुख्यतः उनका दूषित वातावरण है जो उनकी शिक्षा को प्रभावित करता हैं उनके पारिवारिक वातावरण का प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सीधा पड़ता है। जो इनके शैक्षिक रूप से पिछड़ेपन का मुख्य कारण है। उत्तर प्रदेश के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत् विशेष अध्यापकों को सामान्य बच्चों के साथ विशेष बच्चों के अध्यापन करने का दायित्व सौंपा गया है। लेकिन इनके शैक्षिक कर्तव्यों में पूरे दिन विद्यालयों में अध्यापन करना सम्भव नहीं है। सामान्य अध्यापक मानसिक दिव्यांग बच्चों को समझने व अध्यापित करने में पूर्णतः सक्षम नहीं है। जिस कारण से मानसिक दिव्यांग बच्चों की शैक्षिक प्रगति प्रभावित होती है। साथ ही साथ इनकी बुद्धिलब्धि भी प्रभावित होती है। मानसिक दिव्यांग विद्यार्थियों को अगर विशेष, प्रशिक्षण, विशेष शिक्षण एवं विशेष सहायता प्रदान की जाय तो इनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित होने से रोका जा सकता है। विद्यालय के दैनिक कार्यो में रूचि पूर्वक भाग न लेने के कारण विद्यार्थियों की उपलब्धियॉ निराशाजनक रहती है । इनसे सम्बन्धित कारकों को खोजा जायेगा। सरकारी व सामाजिक संस्थाओं में काम करने वाले विशेष शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को निर्देशन व परामर्श प्राप्त कराया जायेगा। प्रस्तुत शोध में मानसिक दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित होने से रोका जायेगा, परिणाम स्वरूप सामान्य विद्यार्थियों के साथ–साथ मन्द बुद्धि विद्यार्थी भी सामान्य बच्चों की तरह अपनी शैक्षिक उपलब्धि को आगे बढ़ा सकेगें।

सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन

शोध से सम्बन्धित निम्नलिखित शोधार्थियों खातून मुबीना सैयादा (2014), रजा नेहा व दूबे चन्द्र (2016), सिंह कीर्ती (2019), गुप्ता एवं सिंह के0 (2019), नीता जी0 एवं सिंह के0 (2020) आदि ने शोध किये हैं।

समस्या कथन

''उच्च प्राथमिक स्तर पर मंदबुद्धि विद्यार्थियों के गृह वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''

चरों का परिभाषीकरण

उच्च प्राथमिक विद्यालय

उच्च प्राथमिक विद्यालय से आशय उन विद्यालयों से है जहाँ पर कक्षा 6 से 8 तक की शिक्षा प्रदान की जाती है। शोध में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों को लिया गया। इसमें अध्ययन करने वाले मानसिक दिव्यांग छात्रों में अधिकांशतः किशोरावस्था के छात्र होते हैं। जो स्वयं कठिन काल से गुजर रहे होते हैं। उनकी शैक्षिक उपलब्धि, पारिवारिक वातावरण कई कारणों से प्रभावित होती है।

मानसिक मंदता

मानसिक मंदता एक स्थिति है जो विभिन्न ज्ञात और अज्ञात कारणों से मस्तिष्कीय कोशिका के क्षतिग्रस्त होने के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है। इसके कारण मानसिक और शारीरिक विकास

अपेक्षाकृत कम हो जाता है। सभी मानसिक मंद बच्चे एक जैसे नही होते। सभी की गम्भीरता का स्तर एवं समस्याएं अलग–अलग होती है। मानसिक मंदता की अनेक परिभाषाएं है, उनमें सबसे अच्छी, विश्लेषणात्मक और सांराशात्मक परिभाषा अमेरिकन एसोसियेशन फॉर मेंटल रिटार्डेशन (AAMR) द्वारा दी गई है। उपरोक्त के अनुसार "मानसिक मंदता सामान्य बौद्धिक क्रियाशीलता (AAMR) के औसत स्तर में कमी को अर्थपूर्ण तरीके से बताता है और क्षति के परिणामस्वरूप अनुकूल व्यवहार में कमी विकासात्मक अवधि के दौरान स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

गृह वातावरण

वातावरण शब्द पर्यावरण का पर्याय है जो दो शब्दों से मिलकर बना है परि और आवरण। परि का अर्थ चारों ओर आवरण का अर्थ है ढका हुआ अर्थात वह वातावरण जो बालक के चारों ओर से ढके हुए रहता है। पारिवारिक वातावरण का अर्थ बालक के उस वातावरण से है जो उसे परिवार से मिलता है इस वातावरण से बालक को स्नेह, प्रेम, संस्कार, अच्छी आदतें व बुरी आदतें और परम्परायें भी शामिल हैं। अगर हम परिवार की बात करें तो –'परिवार मानवीय समाज की एक सर्वाधिक प्राचीन एवं महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है। हम में से प्रत्येक किसी न किसी परिवर का सदस्य है। यह एक प्राथमिक समूह है। समाज शास्त्रियों ने मानव समाज की आवश्यकताओं को दो समूह में बांटा है।

अ– प्राथमिक आवश्यकतायें वह होती हैं जीवन यापन के लिए अति आवश्यक होती हैं।

व– द्वितीयक आवश्यकताऐं वह होती हैं जो जीवन यापन के लिए आवश्यक तो नहीं होती परन्तु जीवन में इनका महत्वपूर्ण स्थान होता है। परिवार का व्यक्ति के जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। किसी भी बालक का सम्पूर्ण विकास परिवार के बिना सम्भव नहीं है। न ही किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास परिवार के बिना सम्भव है। परिवार ही व्यक्ति को उच्च आदर्शो की ओर चलने के लिए प्रेरित करता है। किसी भी व्यक्ति के उच्च जीवन स्तर व व्यक्तित्व के विकास के लिए परिवार का होना अति आवश्यक है। क्योंकि बालक का वृद्धावस्था तक विकास पारिवारिक वातावरण के अन्तर्गत ही होता है। परिवार का वातावरण ही एक बालक के व्यवहार को प्रारम्भ से ही नियन्त्रित करने, स्नेह व अनुशासन प्रदान करने में अहम भूमिका निभाता है।

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धता से तात्पर्य है, विद्यालय में अध्यापित विषयों में सन्तोषजनक ज्ञान प्राप्त करना। किसी विद्यार्थी के विद्यालयी विषयों मे प्राप्त ज्ञान का पता एक लिखित प्रमाण पत्र के रूप में प्राप्त होता है जो विद्यार्थी विषयक कार्य के बारे में सूचित करता है । यह प्राप्त ज्ञान एवं विकसित कौशल दैनिक, मासिक, एवं वार्षिक परीक्षाओं में प्राप्त अंकों से ज्ञात होता है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि विद्यार्थी किस विशिष्ट विषय में या विशिष्ट अध्ययन में किस प्रकार अध्यापन करे जो कि उच्च शैक्षिक उपलब्धता प्राप्त कर सकेगा। इसके लिये एक कुशल अध्यापक नई विधि का प्रयोग करने का प्रयत्न करता है। शोध में मानसिक मंद विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को मापने हेतु शोधार्थी ने कक्षा –7 के मानसिक दिव्यांग विद्यार्थियों के अंको को लिया गया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मानसिक दिव्यांग छात्रों के गृह वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन।
2. उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मानसिक दिव्यांग छात्राओं के गृह वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें

1. उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मानसिक दिव्यांग छात्रों के गृह वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।
2. उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मानसिक दिव्यांग छात्राओं के गृह वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मंदबुद्धि विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

वर्तमान शोधपत्र हेतु 200 छात्र एवं 200 छात्राओं को शामिल किया गया है।

उपकरण

कोई भी अनुसंधान बिना परीक्षण के पूर्ण नही होता। अनुसंधानकर्ता ने प्रस्तुत अनुसंधान के

ऑकड़ों के सकंलन हेतु निम्नलिखित परीक्षणों का चयन किया है

1. मानसिक योग्यता परीक्षण– डॉ0 श्याम जलोटा द्वारा निर्मित प्रश्नावली।
2. पारिवारिक वातावरण मापनी– डॉ0 करूणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित प्रश्नावली।
3. उपलब्धि परीक्षण– गत वर्ष का परिक्षाफल लेकर

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या – 1

उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मानसिक दिव्यांग छात्रों के गृह वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के सहसम्बन्ध का विश्लेषण एवं व्याख्या

समूह	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता स्तर
छात्र	200	0.473	धनात्मक

व्याख्या

तालिका संख्या–1 में उच्च प्राथमिक स्तर के समस्त मानसिक दिव्यांग छात्रों के गृह वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध को दर्शाया गया है। दोनों के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.473 प्राप्त हुआ है। प्राप्त मान दोनों के बीच धनात्मक सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। जिससे सिद्ध होता है कि मानसिक दिव्यांग छात्रों के परिवार के वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है। अतः हम यह कह सकते हैं कि जिस परिवार का वातावरण अच्छा व खुशनुमा होता है वहाँ के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि अच्छी होती है। परिवार का महौल सभी समाजों में व धर्मों में छात्रों के ऊपर विशेष फोकस रखता है और बचपन के ही छात्रों को पढ़ाई के प्रति प्रेरित किया जाता है व समय–समय पर कठोर अनुशासन के माध्यम से उसके अन्दर शिक्षा के प्रति जागरुकता पैदा की जाती है। यह जागरुकता छात्रों के अन्दर अच्छी शैक्षिक उपलब्धि पाने के लिये एक औषधि का कार्य करती है। जिससे यह सिद्ध होता है कि परिवार का वातावरण शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

तालिका संख्या–2

उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मानसिक दिव्यांग छात्राओं के गृह वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का विश्लेषण एवं व्याख्या

समूह	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता स्तर
छात्राऐं	200	0.512	धनात्मक

व्याख्या

तालिका संख्या–2 में उच्च प्राथमिक स्तर के समस्त मानसिक दिव्यांग छात्राओं के गृह वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध को दर्शाया गया है। दोनों के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.512 प्राप्त हुआ है। प्राप्त मान दोनों के बीच धनात्मक सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। जिससे सिद्ध होता है कि मानसिक दिव्यांग छात्राओं के परिवार के वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है। अतः हम यह कह सकते हैं कि छात्राओं के परिवार वाले उन्हें आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करते हैं तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि अच्छी हो जायेगीं। वर्तमान समय में पूरे देश में महिला शिक्षा और शक्तिकरण की बात की जा रही है। बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओं का अभियान भी जोर–शोर से चल रहा है जिससे पता चलता है कि देश समाज और परिवार बालिका के प्रति कितने गम्भीर हैं। यह गम्भीरता परिवार के द्वारा छात्राओं तक पहुँचती हैं जिसमें छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि सकारात्मक रुप प्राप्त करती है। आज के परिप्रेक्ष के लड़कियों को 2.5–3 साल का होने पर ही स्कूलों में प्रवेश दे दिया जाता है और परिवार के सभी लोग मिलकर उसकी लिखाई पढ़ाई के प्रति उसकी शैशवस्था से ही ध्यान देने लगते हैं यह परिवार का वातावरण की उसकी शैक्षिक उपलब्धि को धनात्मक रुप से प्रभावित करता है।

निष्कर्ष

1. उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मानसिक दिव्यांग छात्रों के गृह वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
2. उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मानसिक दिव्यांग छात्राओं के गृह वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. खातून मुबीना सैयदा (2014): ''विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन'' पी0एच0डी0 (शिक्षा शस्त्र), सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान।

2. गुप्ता एन0 एवं सिंह के0 (2019) ''विद्यार्थियों के समायोजन पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन'', समाज विज्ञान शोध पत्रिका, वाल्यू–2, संख्या– ग्स्प्ट, अक्टूबर 2019।
3. नीता जी0 एवं सिंह के0 (2020) : ''महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन'', कवितांजलि शोध पत्रिका, अंक– 17, आाई0एसएस0एन0 नं0– 2278. 8344, अगस्त 2020.
4. रजा नेहा व दूबे चन्द्र (2016) : '' अध्ययन में सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के चिन्तन, अधिगम शैली और शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन'', पी–एच0डी0 (शिक्षा शास्त्र), स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ।
5. सिंह कीर्ती (2019) : ''महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर समायोजन, संवेगात्मक बुद्धि, स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन'' शोध प्रबन्ध शिक्षा शास्त्र, आईएफटीएम विश्व विद्यालय, मुरादाबाद।